शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
50 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

जयप्रकाश नारायण – समाजवाद से सर्वोदय की ओर

डॉ0 किशोर कुमार
एसो0 प्रो0, इतिहास विभाग
कु0 मा0 राजकीय म0
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर, भारत
Email: dr.kumarkishor@gmail.com

डॉ0 अनिल कुमार सिंह
पीएच0 डी0 शोधार्थी
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौडगढ़
राजस्थान, राजस्थान
भारत
Email : aks.ssvic@gmail.com

सारांश

जय प्रकाश नारायण आधुनिक भारत के राजमर्मज्ञों में एक विशिष्ट स्थान रखते है यह शोध पत्र उनके मौलिक विचारों को विश्लेषित करने, मार्क्सवाद के प्रति उनके रुझान एवं अंततः महात्मा गांधी के सर्वोदय के विचारों पर उनकी दृढ आस्था को व्यक्त करने का संक्षिप्त प्रयास है ।

प्रस्तावना

जय प्रकाश नारायण आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक के साथ साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अजेय सैनानी, जननायक एवं स्वतंत्र भारत में व्यवस्था परिवर्तन की आवाज बुलन्द करने वाले यौद्धा थे। जय प्रकाश नारायण जी अपने छात्र जीवन में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गये हुए थें। इस दौरान उनकी मुलाकात पोलैण्ड के ऐव्रम लैण्डी[1] नामक छात्र से हुयी। जो कट्टर मार्क्सवादी एवं साम्यवादी था। उसी के कारण जय प्रकाश नारायण की मार्क्सवाद में दिलचस्पी बढ़ी । उन्होंने अमेरिका में रहकर यह महसूस किया कि यहाँ सम्पन्नता के साथ–साथ गरीबी भी है। विस्कांसिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कहा करते थे कि पूँजीवाद में गरीबी की समस्या का कोई निदान नहीं है। इसका जय प्रकाश नारायण के विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा । इन्ही दिनों में अमेरिका में साम्यवादी मार्क्सवादी नेता जे0 लवस्टोन अपने विचारों का प्रचार एवं प्रसार कर रहे थे, उनके विचारों का प्रभाव भी जयप्रकाश नारायण पर पड़ा । मार्क्सवाद में दिलचस्पी बढ़ने के कारण उन्होंने अपने अमेरिकी प्रवास के दौरान मार्क्स, लेनिन, प्लेखनाव, एम. एन.राय, ट्राटस्की आदि की पुस्तकों का विस्तार से अध्ययन किया। एम.एन.राय की पुस्तक 'आफ्टर मैथ आफ नॉनकार्पोरेशन एवं इडिया इन ट्रैंजिशन और उन्ही द्वारा संपादित पत्रिका 'न्यू मासेस' से जे.पी. बहुत प्रभावित थे। इस तरह जय प्रकाश नारायण मार्क्सवादी एवं साम्यवादी बनें। जे.पी. के शब्दो में,''अमेरिका में, विस्कांसिन में, मैडिसन में, मैं घोर कम्युनिस्ट था, घोर मार्क्सवादी बना, स्टालिनवादी नहीं''। विस्कांसिन में उनकी मुलाकात जे0 लवस्टोन और मैनुएल

गोमेज जैसे साम्यवादी नेताओं से हुआ। गोमेज[2] ने जय प्रकाश नारायण को सलाह दी कि उन्हें मास्को जाकर हाल ही खुले हुए ओरिएण्टल विश्वविद्यालय में साम्यवादी विचारों एवं क्रांति के तौर तरीकों की दीक्षा लेनी चाहिए। जय प्रकाश नारायण को यह विचार बहुत अच्छा लगा। जय प्रकाश नारायण मानसिक तौर पर मास्को जाने के लिए तैयार हो गयें। उन्होने इस सम्बंध में अपनी पत्नी प्रभावती जी को पत्र लिखकर साथ मास्को जाने की अपील की । किन्तु प्रभावती जी ने मास्को जाने से इंकार कर दिया और साथ ही जयप्रकाश नारायण को भी मास्कों न जाने की सलाह दी। जब उनके पिता बाबू हरसू दयाल को जे0पी0 के निर्णय की जानकारी हुई, तो वे काफी विचलित हुए । उन्होने अपने समधी एवं बिहार कांग्रेस के नेता ब्रजकिशोर बाबू एवं शम्भू बाबू के माध्यम से डा0 राजेन्द्र प्रसाद से जे0पी0 को रुस न जाने के सम्बन्ध में पत्र लिखने हेतु आग्रह किया। डा0 राजेन्द्र प्रसाद के पत्र का जे0पी0 पर बहुत बड़ा प्रभाव नहीं पड़ा। धनाभाव के कारण जे0 पी0 को मास्को जाने की योजना स्थगित करनी पडी।

जे0 पी0 को अपनी माँ की अस्वस्थता का समाचार प्राप्त होने पर वे अपनी उच्च शिक्षा की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर सितम्बर 1929 में भारत लौट आयें। भारत में जे0पी0 मार्क्सवाद का प्रयोग भारतीय परिप्रेक्ष्य में करना चाहते थे । जे0पी0 ने स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में कहा कि, ''मेरे लिए केवल स्वतन्त्रता ही पर्याप्त नहीं हैं। इसका अर्थ होना चाहिए सबकी स्वतन्त्रता । जो लोग निम्न स्तर पर है, उनकी स्वतन्त्रता । इस स्वतन्त्रता में शोषण से, भुखमरी से, और दरिद्रता से मुक्ति भी शामिल होनी चाहिए। मैं नहीं कह सकता। कि वे कौन से पूर्व अनुभव थे, जिसने मेरे अवचेतन मस्तिष्क में गरीबों एवं पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की बुनियाद डाल दी थी। मार्क्सवाद ने उसे प्रस्फुटित एवं प्रौढ़ करके प्रत्यक्ष में ला दिया''[3]। जे0 पी0 का परिवार एक मध्यवर्गीय परिवार था । उन्हें अपने परिवार से बहुत कम आर्थिक सहायता मिल पाती थी ऐसी स्थिति में अपने दैनिक खर्च एवं विश्वविद्यालय के शिक्षण के लिए फीस की आवश्यकता की पूर्ति हेतु सामान्य मजदूर की तरह खेतों, रेस्तराओं एवं कारखानों में कार्य करना पड़ा । समता का महत्व उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण था, जितना आजादी का आदर्श। जे0 पी0 का मानना था कि उनके लिऐ आजादी का अर्थ व्यापक है। स्वतंत्र भारत का अर्थ मेरे लिए समाजवादी भारत है और स्वराज से मेरा आशय था गरीब एवं पददलित लोगों का राज्य है।''[4]जे0पी0 को स्वतत्रता के लिए क्रांति का मार्क्सवादी सिद्धान्त, गांधी जी की सत्याग्रह की अपेक्षा अधिक सरल एवं शीघ्रगामी प्रतीत हुआ। जे0पी0 कहते थे कि इस प्रश्न पर गांधी जी की स्थिति क्या थी उस समय मैं निश्चित रुप से नहीं जानता था दरअसल उन दिनों श्री एम.एन. राय जो लिखते थे, उसने मुझे विश्वास दिला दिया कि गांधी जी सामाजिक क्रांति के विरुद्ध है और संकट के समय जल्दी शोषण एवं असमानता की प्रणाली को स्वीकार कर लेगे । उस समय मै यह नहीं समझता था कि सामाजिक क्रांति के सम्बन्ध में गांधी जी के भी अपने विचार है, साथ ही उसके लिए उनके अपने तरीके भी थे[5] ।

जे0पी0 भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल नहीं हुए क्योंकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कमिन्टर्न[6] के द्वारा संचालित होती थी। सन 1924 में लेनिन की मृत्यु

हो गयी । स्टालिन के नेतृत्व में रुस की विदेश नीति में व्यापक बदलाव आया। कमिन्टर्न की नीति रुस की विदेश नीति के अनुरुप होती थी। स्टालिन ब्रिटेन का विरोध नहीं करना चाहता था, क्योकि रुस चारो तरफ से पूंजीवादी व्यवस्था वाले देशो से घिरा था। इसलिए स्टालिन अपने देश में साम्यवादी शक्तियों की मजबूती में लगा था। सोवियत संघ में बडी संख्या में स्टालिन विरोधियों की झूठे आरोपों के आधार पर की गयी हत्याओं से उनका मन कम्युनिज्म के खिलाफ विद्रोह कर उठा। स्टालिन चाहते थे कि अन्य देशो की कम्युनिस्ट पार्टियां भी उनके नियन्त्रण में हो। वे विश्व साम्यवाद के निर्विवाद नेता बने रहना चाहते थे। यदि कोई भी गैर रुसी व्यक्ति विश्व साम्यवाद के नेता के रुप में उनका उत्तराधिकारी बनने की चेष्टा करता तो उसे उसकी औकात बता दी जाती थी। यूगोस्लाविया के नेता मार्शल टीटो के सम्बन्ध में उक्त बाते सही साबित हुई। कमिन्टर्न में ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी भारत का प्रतिनिधित्व करती थी, इन्ही कारणों से कमिन्टर्न ने ब्रिटेन के विरुद्ध स्वाधीनता की लड़ाई में समर्थन नहीं किया। उर्पयुक्त परिदृश्य में जे0 पी0 महसूस कर रहे थे कि एक ऐसा मंच गठित होना चाहिए, जिसमें ऐसे लोग आ सकें जो मार्क्सवादी विचारधारा के होते भी राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान कर सकें। उनका स्पष्ट मानना था कि कांग्रेस की नीतियों एवं गांधीवादी फार्मूले से देश के दलित एवं पिछड़े हुए लोगों की तकदीर नहीं बदली जा सकती।

जय प्रकाश नारायण अभी भी मार्क्सवादी थे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान उनको गिरफ्तार कर नासिक जेल में रखा गया। नासिक जेल में पहले से बंदी समाजवादी नेताओं मीनू मसानी, अच्यतु पटवर्धन, एन. जी. गोरे, अशोक मेहता के साथ–साथ भूलाभाई देसाई, मोरारजी देसाई जैसे लोगों से इनकी मुलाकात हुयी। नासिक जेल में बंद समाजवादी नेताओ में समाजवादी पार्टी के गठन, राष्ट्रीय आन्दोलन को और मजबूत बनाने आजादी के बाद स्वराज्य का स्वरुप कैसा हो, समाज के कमजोर एवं उपेक्षितलोगों को स्वतन्त्रता आन्दोलन से जोड़ने इत्यादि विषयों पर चर्चा होती थी। आमतौर पर सभी समाजवादी नेता इस बात पर सहमत थे कि पूंजीवादी व्यवस्था अपने अन्तरविरोधों से चरमरा कर गिर जायेगी क्योकि बार–बार मन्दी एवं उछाल को नियन्त्रित नहीं कर पायेगी और शोषित जनता मुट्ठीभर सम्पन्न लोगो के विरुद्ध हिंसात्मक विद्रोह कर देगी। इतिहास ऐसे वर्ग–संघर्ष की कहानियों से भरा पड़ा है।

सन 1933 में जे0 पी0 जेल से छूटे। उसके कुछ समय बाद ही वे कांग्रेस समाजवादी पार्टी के गठन में लग गये । 17 मई 1934 को पटना के अंजुमन इस्लामिया हाल में समाजवादियों का एक सम्मेलन आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में हुआ जिसमें कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ, जिसमें जे0पी0 को महासचिव चुना गया। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन कांग्रेस के अन्दर हुआ। क्योंकि वे किसी भी तरह कांग्रेस को कमजोर करना नहीं चाहते थे। उनका मानना था कि कांग्रेस स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए एक राष्ट्रीय मंच थी। किन्तु इस पार्टी के संस्थापक कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ थे। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के गठन को बहुत से कांग्रेसी नेताओं ने पसंद नहीं किया। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के मुख्य कार्यक्रमों में कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधार,

औधोगिक मजदूरों की समस्यायें, रजवाड़ो का भविष्य संघर्ष, तथा जनता को लामबंद करने के गैर–गांधीवादी तरीके जैसे विषय इसमें शामिल थे।

मार्क्सवादी चिंतन के कारण जे0पी0 किसान एवं मजदूरों के आन्दोलनों को प्रधानता देते थे। माओं की तरह उनकी मान्यता थी कि भारत में क्रांति का सिपाही मजदूर की जगह किसान बनेगा। जे0 पी0 ने महसूस किया कि किसी आन्दोलन का जनाधार तभी मजबूत होगा। जब बड़ी संख्या में लोग उसमे शरीक होगें । इसके लिए किसानों की सहभागिता आवश्यक है। क्योकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत में मजदूर (औद्योगिक मजदूरों) की संख्या बहुत ही कम है और शहरों में सिमटे हुए है। उन्होंने सहकारी खेती एवं सामूहिक खेती की वकालत की। गांवो के उत्थान एवं सत्ता के विकेन्द्रीयकरण पर जोर दिया। उनका स्पष्ट मानना था कि प्राकृतिक संसाधनों पर व्यक्तिगत स्वामीत्व नहीं हो सकता। सामाजिक विषमता का मूल कारण व्यक्तिगत स्वामित्व ही है। इसलिए प्राकृतिक सम्पदा पर समाज का स्वामीत्व होना चाहिए। 1936 में उनकी चर्चित पुस्तक 'Why Socialism' (समाजवाद क्यों) प्रकाशित हुई जिसमें समाजवाद की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला। उन्होने इस पुस्तक में गांधी जी की आलोचना की थी। फिर भी उसकी एक प्रति महात्मा गांधी को भेज दी थी।

गांधी जी के विचारों के प्रबल विरोधी होते हुए भी जे0 पी0 कई मामलों में पूर्णतः गांधीवादी थे। 1940 के दशक के उत्तरार्ध में जय प्रकाश नारायण का झुकाव गांधीवादी विचाराधारा की ओर होने लगा और कालान्तर मे जे0 पी0 गाधीवादी रंग में रंग गयें । इससे पूर्व भी गांधी जी और जे0 पी0 की सोच में लोकशक्ति के मुद्दे पर अटूट साम्यता थी। गांधी जी सदैव लोकसत्ता को मजबूत करने के पक्षधर थे क्योकि उनका मानना था कि केवल राजसत्ता के जरिये कोई व्यापक परिवर्तन समाज में नहीं किया जा सकता है। इसी कारण आजादी प्राप्त होने के बाद गांधी जी कांग्रेस को एक लोकसेवक संघ में परिवर्तित करना चाहते थे। अपनी हत्या के एक दिन पहले 29 जनवरी 1948 को गांधी जी ने कांग्रेस के संविधान में सुधार करने के लिए एक मसौदा तैयार किया था।इसमें उन्होंने लिखा कि ''कांग्रेस ने देश को स्वाधीनता दिलाकर एक बहुत बडा काम किया है किन्तु अभी उसे बहुत बडे–बडे काम करने है। देश को राजकीय स्वतन्त्रता मिली है। किन्तु अभी जनता की और खासकर गांवो की आर्थिक सामाजिक तथा नैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कराना बाकी है। भारत लोकतन्त्र की दिशा में जैसे जैसे आगे बढ़ता जायेगा वैसे–वैसे नागरिक शक्ति और सैनिक शक्ति के बीच संघर्ष खड़ा होने की संभावना है। इसलिए सैनिक शक्ति नागरिक शक्ति के नियन्त्रण में रहे, ऐसी समाज रचना हमें करनी है।''[7]

धीरे धीरे जे0 पी0 के मन में अहिंसा के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा था। रुस की क्रांति और उसके बाद रुस में घटी घटनाओं ने जे0 पी0 की विचारधारा पर प्रभाव डाला। जे0 पी0 महसूस करने लगे कि शुद्ध साध्य तक पहुचने के लिए शुद्ध साधन की आवश्यकता होगी। गांधी की हत्या के बाद जे0 पी0 का हिंसा से विश्वास उठ गया। इस बात की पुष्टि सन 1948 के कांग्रेस समाजवादी पार्टी (परिवर्तित नाम समाजवादी पार्टी) के छठें अधिवेशन में महामंत्री की हैसियत से उनके दिये गये भाषण से स्पष्ट होता है। जिसमें उन्होने कहा कि 'शुद्ध साधन के

बिना' समाजवाद की स्थापना नहीं हो सकती। ''गांधी जी ने हमें बहुत सी बातें सिखलायी है किन्तु उनमें सबसे बड़ी सिखावन यह है कि साधन ही साध्य है । यह कि बुरे साधनों से कभी अच्छे परिणाम की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह कि अच्छे साध्यों की प्राप्ति के लिए साधन भी अच्छे होने चाहिए। हम मे से कुछ इस सत्य के बारे में शंकालू होंगे परन्तु हाल की घटनाओं ने मुझे यह प्रतीति करा दी है कि अच्छे साधनों के सहारे ही अच्छे समाज के लक्ष्य पर जिसे समाजवाद कहा जाता है । हम पहुच सकते हैं।[8]''

गांधी जी की दुसरी पुण्य तिथि पर सर्व सेवा संघ द्वारा तैयार की गयी सर्वोदय योजना देश के समक्ष प्रस्तुत की गयी। लगभग इसी समय वर्धा में भी एक सर्वोदय योजना प्रस्तुत की गयी जिसके प्रणेता श्री विनोबा भावे थे। इस योजना में एक जाति – विहीन , वर्गहीन, अहिंसक, शोषण मुक्त, सहकारी समाज बनाने की कल्पना थी। जिसमें सबको समान अवसर मिलेगें । इसमें प्रतियोगी अर्थव्यवस्था की जगह सहकारी सामाजिक अर्थव्यवस्था स्थापित करने का सुझाव था। इस सम्बन्ध में जे0 पी0 का विचार था कि स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व की पुरानी ज्योति, जिसने मेरे जीवन का रास्ता प्रशस्त किया था और जिसने मुझे लोकतान्त्रिक समाजवाद की ओर लायी थी। मुझे खेद है कि मैं अपनी जीवन यात्रा में जब गांधी जी हमारे बीच विद्यमान थे, इस स्थल पर नहीं पहुच सका। फिर भी कुछ समय पूर्व मुझे विश्वास हो गया था कि हमारा आज का समाजवाद मानव–जाति को स्वतन्त्रता बन्धुत्व, समानता और शांति के उत्कृष्ट लक्ष्य तक नहीं ले जा सकता।.............. जब तक समाजवाद सर्वोदय में रुपान्तरित नहीं हो जाता, वे लक्ष्य इसकी पहुच से बाहर रहेंगें और जिस प्रकार हम आजादी के आनंद से वंचित रह गये, वैसे ही हमारे आने वाली पीढ़ियो को समाजवाद से वंचित रहना पड़ सकता है।[9]

श्री बिनोबा भावे पवनार आश्रम से सैकड़ो मील पैदल चलकर हैदराबाद पहुचे और वहां सर्वोदय सम्मेलन में सम्मिलित हुए। बाद में आन्ध्र प्रदेश के नलगौंडा जिला के पोचमपल्ली गांव की एक प्रार्थना सभा के बाद 40 अछूत परिवारो ने उनसे जमीन उपलब्ध कराने का आग्रह किया ताकि वे अपनी जीविका का उपार्जन कर सके। इसी सभा में मौजूद रामचन्द्र रेड्डी ने 100 एकड़ जमीन दान में दे दी। विनोबा जी कहते है कि मेरे लिए यह घटना साधारण घटना नहीं थी क्योंकि जिस जमीन के लिए खून–कत्ल होते है, कोर्ट – कचहरी होती रहती है । वह जमीन दान में मिली है। इसके पीछे कोई संकेत छिपा है। रात–भर चिंतन चला और मुझे अनुभव हुआ कि यह एक इलहाम हो गया है। लोग प्रेम से जमींन दे सकते है। यही से मुझे भूदान आन्दोलन की प्रेरणा मिली।[10]

मैं ब्राहमण था ही, मैने वामनावतार ले लिया और लोगों से भूमि दान मांगना शुरु किया।[11] विनोबा भावे ने भू–स्वामियों से अपनी भूमि का छठा हिस्सा छठे पुत्र के हिस्से के रुप में दान मांगा[12]। जे0 पी0कहते है कि शुरु में मैने आन्दोलन की सार्थकता के बारे में संदेह किया किन्तु स्वयं महसूस किया, कि यदि विनोबा जी जैसे व्यक्ति ने यह शुरु किया है तो केवल शिगुफा नहीं हो सकता है। इसी उधेडबुन में जे0 पी0, विनोबा जी से मिले और उनकी संकल्पना पर चर्चा की। जे० पी० ने महसूस किया कि उन्हें स्वयं अनुभव करना चाहिए । इसलिए बिहार के गया

जिले में घुमे और 7 दिनो में साढेसात एकड़ भूमि दान में प्राप्त हुयी। भाव विभोर होकर जे0पी0 कहते है कि गांधी जी के जीवन काल में बराबर उनकी ओर खिचतें आते हुए भी मैं पूरी तरह से समझ नहीं सका था कि इस अंहिसक पद्धति से सामाजिक क्रांति कैसे होगी। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय उस पद्धति ने कैसे काम किया था, यह मुझे मालूम था किन्तु उन्ही साधनों से सामंतवाद और पूंजीवाद कैसे नष्ट होगे और कैसे नये समाज का निर्माण होगा, यह चीज मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आयी थी। मैने हृदय परिवर्तन के द्वारा क्रांति पर गांधी जी के लेख अवश्य पढ़े थे । किन्तु प्रत्यक्ष प्रदर्शन या व्यवहार के अभाव में वे विचार मुझे अत्यन्त अव्यवहारिक लगें थे।[13] जय प्रकाश नारायण भूदान आन्दोलन में कूद पड़े क्योंकि ''भूदान में सम्पूर्ण क्रांति के बीज नीहित हैं।[14]''

उपर्युक्त विवेचनाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि जय प्रकाश नारायण अपनी परिकल्पनाओं का भारत बनाने के लिए मार्क्सवाद एवं समाजवाद को ही एक मात्र साध्य के रुप में महसूस करते है परन्तु भारतीय समाज की गहन विवेचना और महात्मा गांधी के सम्पर्क एवं विचारों के पश्चात उन्हें यह महसूस हो जाता है कि गांधी जी का सर्वोदय ही भारतीय परिपेक्ष्य में समग्र विकास का सबसे बेहतरीन एवं पवित्र साधन है।

संदर्भ

1–ऐव्रम लैण्डी– पोलैण्ड निवासी यहुदी छात्र, जो कट्टर मार्क्सवादी एवं साम्यवादी पार्टी का सदस्य था। जय प्रकाश नारायण– सुधांसु रंजन–राष्ट्रीय पुस्तक –मास, भारत, नई दिल्ली, 2014 पृष्ठ सं0 18।

2–गोमेज– मैनुएल गोमेज प्रसिद्ध अमेरिकी साम्यवादी नेता, जो उन दिनों अमेरिका में अपने विचारों का प्रसार वं प्रसार कर रहे थे और विस्कांसिन में जे0 पी0 से मिले। जय प्रकाश नारायण– सुधांसु रंजन–राष्ट्रीय पुस्तक –मास, भारत, नई दिल्ली, 2014 पृ0 सं0 19।

3–*समाजवाद से सर्वोदय की ओर– जय प्रकाश नारायण* – सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या–12

4–*समाजवाद से सर्वोदय की ओर–जय प्रकाश नारायण* – सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या–15

5–समाजवाद से सर्वोदय की ओर– जय प्रकाश नारायण – सर्व सेवा संघ प्रकाषन, राजघाट, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या–12

6– कमिन्टर्न–कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल का संक्षिप्त नाम है।

7–जय प्रकाश नारायण– सुधांसु रंजन – राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली 2014 पृष्ठ संख्या–90

8–जय प्रकाश नारायण– सुधांसु रंजन – राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली 2014 पृष्ठ संख्या–93

9–समाजवाद से सर्वोदय की ओर–जय प्राकश नारायण – सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या–**31**

10–*अहिंसा की तलाश*– संकलनकर्ता कालिन्दी– परंधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा 2008 पृष्ठ संख्या–**133**

11–*अहिंसा की तलाश*– संकलनकर्ता कालिन्दी–परंधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा 2008 पृष्ठ संख्या–**134**

12– *जय प्रकाश नारायण*– सुधांसु रंजन –राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली 2014 पृष्ठ संख्या–**120**

13–*समाजवाद से सर्वोदय की ओर– जय प्रकाश नारायण* – सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या–**54**

14–*समाजवाद से सर्वोदय की ओर– जय प्रकाश नारायण* – सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या–**57**